अर्द्धवार्षिक परीक्षा 2022–23
कक्षा – 12 वी
विषय – हिन्दी

समय–3 घण्टे **पूर्णांक–80**

नोट :– सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।

प्र.1 सही विकल्प चुनकर लिखिए । 6

1. आत्म परिचय के रचयिता है।
   क. हरिवंशराय बच्चन ख. अलोक धम्वा ग. सूरदास
2. महादेवी वर्मा का जन्म कब हुआ था ?
   क. 11 सितम्बर 1907 ख. 26 मार्च 1907 ग. 15 मई 1915
3. इस शाखा के कवियों ने प्रेम के द्वारा ईश्वर तक पहुँचने का निरूपित किया।
   क. ज्ञानमार्गी ख. रामभक्ति ग. प्रेममार्गी
4. इस शाख केकवियों ने राम को लोकरक्षक के रूप में मान्यता दी ।
   क. रामभक्ति ख. कृष्णभक्ति ग. ज्ञानमार्गी
5. आदिकालीन काव्य की भाषा थी ।
   क. अपभ्रंश ख. डिंगल–पिंगल भाषा ग. अवधी भाषा
6. हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णयुग कहलाता है।
   क. आदिकाल ख. रीतिकाल ग. भक्तिकाल

प्र.2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए । 6

1. भक्तिकालीन साहित्य में ..... भावना की प्रधानता थी (भक्ति / वीर)
2. भक्तिकाल में ..... चिंतन की धारा है। (धार्मिक / सामाजिक)
3. निर्गुण भक्तिधारा की मुख्य ..... शाखा है। (दो / पाँच)
4. उपमा अलंकार के अंग ..... होते हैं। (चार / तीन)
5. भक्तिकाल का समय ..... माना जाता ..... है। (1050 से 1375 तक / संवत 1375 से 1740 तक)
6. चन्दबाई की रचना ..... है। (बीसलदेव रासो / पृथ्वीराज रासो)

6

प्र.3 जोड़ी मिलाइए ।

1. ज्ञानमार्गी	–	तुलसीदास
2. प्रेममार्गी शाखा के कवि	–	कबीर
3. रामभक्ति शाखा के कवि	–	जायसी
4. श्रीजयशंकर प्रसाद	–	दीपशिखा
5. सुमित्रानन्दन पंत	–	कामायनी
6. महादेवी वर्मा	–	लोकायतन

6

प्र.4 सत्य / असत्य बताइए ।

1. भक्तिन पाठ के रचयिता महादेवी वर्मा है।
2. क्या वह अच्छा आदमी है उक्त वाक्य निषेधवाचक वाक्य है।
3. उसने झूठ कहा था। उक्त वाक्य शुद्ध है।
4. जो संतुष्ट न हो वह संतुष्ट कहलाता है।
5. श्रंगार रस का स्थायी भाव रति है।
6. दो शब्दों के संयोग को संधि कहते है।

1

CamScanner

प्र.5 एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

1. कविता के बहाने कविता के रचनाकार है ?
2. भक्तिन का नाम क्या था ?
3. अलंकार कितने प्रकार के होते है ?
4. भक्तिकाल के दो कवियों के नाम बताइए ?
5. नाटक के तत्व कितने होते है ?
6. श्रृंगार रस के कितने भेद होते है ?

प्र.6 रस की परिभाषा बताइए ? 1

प्र.7 अलंकार की परिभाषा बताइए ? 1

प्र.8 बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे ? 2

प्र.9 इस कविता में किसे नादान कहा गया है और क्यों ? 2

प्र.10 छायावादी दो कवियों के नाम बताइए ? 2

प्र.11 द्विवेदी युग क दो विशेषताएँ बताइए । 2

प्र.12 छन्द की परिभाषा लिखिए । 2

प्र.13 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए । 2

1. उसने झुठ कही थी 2. मैने [illegible] है

प्र.14 निम्नलिखित वाक्यों को आदे[illegible]सार परिव[illegible] कीजिए । 2

1. क्या शिरीष के वृक्ष बडे और छा[illegible]दार हो[illegible] है (नकारात्मक)
2. पन्द्रह वर्ष बित गए (आ[illegible] वाक्य)

प्र.15 निम्नलिखि[illegible] का भाव पल्लवन कीजिए । 2

विद्या से वि[illegible] आती है

अथवा

स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है

प्र.16 निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए । 2

1. नौ दो ग्यारहा होना 2. नाक में दम करना

प्र.17 निम्नलिखित शब्दों के दो – दो पर्यायवाची लिखिए । 2

आँख , हाथी

प्र.18 उडने और खिलने का कविता से क्या संबंध बनता है? 3

प्र.19 दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने किसी दुर्बल को क्यो लाते है ? 3

प्र.20 भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई ? 3

CamScanner

प्र.21 बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या – क्या असर पड़ता है ? 3

प्र.22 निम्नलिखित पद्यांश का सन्दर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए । 4

हम दूरदर्शन पर बोलें हम समर्थ शक्तिवान , हम एक दुर्बल को लाएँगे एक बन्द कमरे में , उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज है ? तो आप क्यों अपाहिज है। आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा देता है । (कैमरा दिखाओं इसे बड़ा–बड़ा) हाँ तो बताइए आपका दुःख क्या है ? जल्दी बताइए वह दुःख बता नहीं पाएगा।

अथवा

बात सीधी थी पर भाषा के चक्कर में जरा टेढ़ी फँस गई । उसे पाने की कोशिश में भाषा को उलटा पलटा तोड़ा मरोड़ा घुमाया फिराया कि बात या तो बने या फिर भाषा से भाहर आए लेकिन इससे भाषा के साथ – साथ बात और भी पेचीदा होती चली गई।

प्र.23 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 4

आत्मविश्वास का अर्थ अहंकार नहीं है अहंकार तथा आत्मविश्वास में बहुत अंतर है । आत्मविश्वास वस्तुतः आत्मज्ञान है। वह अपनी शक्तियों की सही पहचान कराता है। आत्मविश्वास उस अनुभूति का नाम है जो व्यक्ति को उसकी योग्यता से प्राप्त होती है। जब एक व्यक्ति किसी
कार्य के विषय में अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अपनी कार्य योग्यता अधिक समझता है, जो कार्य अन्य व्यक्तियों को कठिन अथवा असम्भव प्रतीत होता है [illegible] सम्भव समझता है। यह आत्मविश्वास का परिणाम है।

प्रश्न –

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए ।
2. गद्यांश का सारांश लिखिए ।

अथवा

अनुशासन विद्यार्थी का वैरण्य [illegible] अनुशासन ही विद्यार्थी हर क्षेत्र में अपयश का कारण बनता है। उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है अनुशासन की उपेक्षा करने वाला विद्यार्थी अनेक गुणों से वंचित रह जाता है देश का भावी नागरिक होने के कारण उसके लिए अनुशासन नितांत आवश्यक है।

प्रश्न:-

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए ।
2. गद्यांश का सारांश लिखिए ।

प्र.24 अपने विद्यालय के प्राचार्य महोदय को स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र लेने के लिए एक आवेदन – पत्र लिखिए । 4

अथवा

अपनी दिनचर्या बताते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए ।

प्र.25 किसी एक विषय पर सारगर्भित एक निबंध लिखिए। 4

1. पर्यावरण प्रदुषण
2. विज्ञान का चमत्कार
3. परोपकार
4. अनुषासन

****

हिन्दी - 12

प्र01 → ① हरिवंशराय बच्चन ② 26 मार्च 1907 ③ ज्ञानमार्गी ④ कृष्णभक्ति ⑤ डिंगल पिंगल

प्र05)

(1) कुंवर नारायण
(2) लाक्ष्मिन (लक्ष्मी)
(3) 2 प्रकार
(4) केशव, बिहारी, भूषण।
(5) 6 तत्व।
(6) 2 भेद।

प्रश्न 2 ① भक्ति
② धार्मिक
③ दो
④ चार
⑤ संवत् 1375-1700 तक
⑥ पृथ्वीराज रासो

प्रश्न - 3

3
1
2
6
4
5

प्रश्न - 4 T, F, T, F, T, F

प्र06) → रस - काव्य में रस का अर्थ है। आनन्द की प्राप्ति। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि को पढ़ने या सुनने, देखने में जो आनन्द की अनुभूति होती है। उसे रस कहते हैं।

प्र07 → अलंकार → काव्य की शोभा बढ़ाने वाले साधनों (शब्दों) को अलंकार

प्र08) → बच्चे इस बात की आशा में नीड़ो से झाँक रहे होंगे की सुबह से भोजन की तलाश में निकले उनके माता पिता सूर्यास्त की बेला में अब वापस आ रहे होंगे और उनके लिए भोजन ला रहे होंगे।

प्र09) कविता में सांसारिकता के दाने को चुगने वाले को नादान कहा गया है। कवि के अनुसार जो सांसारिक मनुष्य निरा भोगी होता है। वह नादान होता है। कवि भावनामय संसार को सार्थक तथा, प्रेम की कोमल दुनिया को सच्ची मानता है।

प्र010) ① जयशंकर प्रसाद ② सुमित्रानन्दन पंत (सही जोड़ी ले)

प्र011) ① राष्ट्रीयता की भावना
② नीति और आदर्श
काव्य आदर्शवादी व नीतिपरक है। (द्विवेदी युग की विशेषता)

CamScanner

(२)

① सही विकल्प →

① (द) यात्रावृत्तांत और रेखाचित्र रूप में।
② (ब) अपाहिज।
③ (अ) कथानक को।
④ (अ) मराठी
⑤ (अ) तुलसीदास
⑥ (द) उपरोक्त सभी

प्र०5 ① — सत्य।
② — असत्य।
③ — असत्य।
④ — सत्य
⑤ — सत्य
⑥ असत्य

④ एक वाक्य
(1) इंदर सेना।
(2) 3 प्रकार।
(3) अपने फायदे के लिए दूसरों को धोखा देना या उन्हें अंधेरे में रखना।
(4) 48 मात्राएँ।
(5) वह माल और सेवाओं की मात्रा जो बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा मुद्रा की एक इकाई से खरीदी जा सकती। (क्रयशक्ति)
(6) 2 पुत्र।

रिक्त स्थान

① निराशा ② मात्रिक
③ जायसी
④ नीहार, ⑤ तीन
⑥ छोह ⑦ सूर्योदय

③ सही जोड़ी

Origin	Row
1	4
2	3
3	5
4	6
5	2
6	1

3. वाणी थी अवरुद्ध प्रेम में
परम शांत थी हर्ष विभोर।
चरण-पकड़कर निरख रही थी।
पुनि-पुनि कृपा सिंधु की ओर।।

3. छन्द

कविता के रचना विधान को 'छन्द' कहते हैं। छन्द कविता का व्याकरण है। आवश्यक अंग है। मात्रा या वर्ण की गणना या क्रम के आधार पर जहाँ काव्य की रचना की जाती है। वहाँ छन्द होता है।

परिभाषा—वर्णों की संख्या एवं क्रम, मात्राओं की गणना तथा यति-गति से सम्बद्ध नियोजित काव्य रचना को छंद कहा जाता है।

छन्द के अंग—(1) चरण या पाद, (2) वर्ण और मात्रा, (3) यति, (4) गति, (5) तुक, (6) गण।

1. पाद या चरण—'पाद' को चरण भी कहते हैं। छन्द शास्त्र में पाद का अर्थ छन्द का चतुर्थ भाग है। छन्दों में प्रायः चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में वर्णों या मात्राओं की संख्या क्रमानुसार नियोजित रहती है।

ये चरण दो प्रकार के होते हैं—(1) सम चरण, (2) विषम चरण।

प्रथम और तृतीय चरण को विषम तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण को सम चरण कहते हैं।

प्रथम	उदित उदयगिरि मंच पर	(विषम चरण)
द्वितीय	रघुवर बाल पतंग।	

जुट कर देता था।

6. 'भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है।' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- जो भक्तिन लेखिका महादेवी वर्मा के पास सेवक बनकर आयी थी, बाद में वह लेखिका की अभिन्न छाया बन गई। अब कोई यह नहीं कह सकता कि लेखिका और भक्तिन का सम्बन्ध स्वामी-सेवक जैसा है।

7. भक्तिन के आ जाने से महादेवी देहाती कैसे हो गई?

उत्तर- भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा का ज्ञान हो गया था। इससे पहले वह केवल शहरी जीवन से ही जुड़ी हुई थीं। इसके साथ ही भक्तिन ऐसी परिस्थितियाँ भी पैदा कर देती थी कि वह देहाती परंपराएँ तक निभाने को बाध्य हो जाती थीं। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई।

8. 'भक्तिन की कहानी अधूरी है।' लेखिका महादेवी ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- भक्तिन की कहानी अधूरी है- क्योंकि लेखिका भक्तिन का अन्त करके उसे खोना नहीं चाहती। लेखिका को भक्तिन के प्रति दया और स्नेह का भाव आ जाने से वह कहानी अधूरी रखती है।

Transfer certificate application in Hindi

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य जी.

राजकीय विद्यालय.

बरहज, देवरिया यूपी।

विषय :- स्थानांतरण प्रमाण पत्र हेतु आवेदन ।

मान्य महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि मैं राहुल यादव यह बताना चाहूंगा कि मैंने मार्च 2020 में आपके स्कूल राजकीय विद्यालय से 10 वीं कक्षा प्रथम श्रेणी के साथ पूरी की है। मेरे पिताजी का इसी साल (अप्रैल में) दुसरे शहर में स्थानांतरण हो गया है जिस वजह से मैं और मेरा परिवार दुसरे शहर में जा रहे हैं। स्कूल फ़ीस का भुगतान करने के लिए अब कोई बकाया नहीं है और इसके अलावा मैंने पुस्तकालय विभाग के साथ भी अपना बकाया चुका दिया है।

अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया मुझे मेरा विद्यालय स्थानांतरण प्रमाणपत्र आवेदन पत्र जारी करने की कृपा करें। मैं वास्तव में आपका आभारी रहूंगा।

धन्यवाद

जो लिखते हैं—

'श्रम होता सबसे अमूल्य धन, सब जन खूब कमाते।
सब अशंक रहते अभाव से, सब इच्छित सुख पाते॥'

उपसंहार—इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्रम और सक्रियता जीवन को श्रेष्ठ बनाने का आधार है और आलस्य निरन्तर पतन की ओर ले जाने वाला है। आलस्य से मानव जीवन व्यर्थ चला जाता है, इसीलिए आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

(19) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन (2017)

अथवा

अनुशासन का महत्व (2009, 15)

"अनुशासन है प्राण प्रगति का, इसका पालन करना।
संकट हों कितने ही पथ में, तू न हिचकना, डरना॥"

रूपरेखा (2018)—(1) *प्रस्तावना*, (2) *अनुशासन का महत्व*, (3) *विद्यार्थी और अनुशासन*, (4) *अनुशासन की शिक्षा*, (5) *अनुशासन के लाभ*, (6) *अनुशासनहीनता की हानियाँ*, (7) *अनुशासन विकास का आधार*, (8) *उपसंहार*।

प्रस्तावना—सृष्टि में सूर्य, चन्द्रमा, तारे, ऋतु, प्रातः, संध्या आदि को नियमित रूप से आते-जाते देखकर स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि के मूल में एक सुनियोजित व्यवस्था कार्य कर रही है। ये सभी तत्व अनुशासन में बँधकर चलते हैं। यही कारण है कि उनके कार्य-कलापों में किंचित मात्र भी अन्तर नहीं हो पाता है। यह प्रकृति ही हमें अनुशासन में रहने की प्रेरणा देती है। 'अनुशासन' शब्द का अर्थ है—नियम के पीछे चलना। अनुशासन का अर्थ परतन्त्रता कदापि नहीं है। समय, स्थान तथा परिस्थितियों के अनुरूप सामान्य नियमों का पालन करना ही अनुशासन कहलाता है।

अनुशासन का महत्व—अनुशासन का जीवन में विशेष महत्व है। समस्त प्रकृति एक अनुशासन में बँधकर चलती है, इसलिए उसके किसी भी क्रियाकलाप में बाधा नहीं आती है। दिन-रात नियमित रूप से आते रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि अनुशासन के द्वारा ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। अनुशासन के मार्ग से भटक जाने पर व्यक्ति चरित्रहीन, दुराचारी, पतित तथा निन्दनीय हो जाता है। समाज में उसका कोई सम्मान नहीं रहता है। अनुशासन के अभाव में उसका तन तथा मन दोनों दूषित हो जाते हैं।

विद्यार्थी और अनुशासन—विद्यार्थी जीवन मनुष्य के भावी जीवन की आधारशिला है। शिक्षा काल में निर्मित विद्यार्थी ही भावी नागरिक बनेगा। विद्यार्थी अनुशासन में रहकर ही स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवहार तथा आचार प्राप्त कर सकता है। नियमित रूप से अध्ययन करना, विद्यालय जाना, व्यायाम करना, गुरुजनों से सद्व्यवहार करना ही विद्यार्थी जीवन का अनुशासन हैं। इसके बिना विद्यार्थी का निर्माण नहीं हो सकता है। इसका निर्माता गुरु है, क्योंकि—

CamScanner